जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 44 संख्याः 332 प्रभात बीकानेर, मंगलवार 27 जून, 2023 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

माना जा रहा है कि, तीन बी ईटर चिड़ियों की यू.के. में ऐतिहासिक वापसी हुई है। गत वर्ष गर्मी में नॉरफोक में ब्रीडिंग बी ईटर्स की एक कॉलोनी ने सफलतापूर्वक प्रजनन किया था। इस वर्ष उनमें से तीन बी ईटर्स ने वापसी की है। आर.एस.पी.बी. (रॉयल सोसायटी फॉर प्रोटैक्शन ऑफ बड्र्स) ने बताया है कि, तीन रंगबिरंगी चिड़ियाँ, नॉरफोक के शहर क्रोमर के पास नज़र आई हैं, जिनमें से एक प्रजनन योग्य जोड़ा है। यह पहली बार है, जब बी ईटर्स लगातार दूसरे साल एक ही प्रजनन स्थल पर लौटी हैं। आर.एस.पी.बी. की निगरानी वाले इस क्षेत्र को, इस खूबसूरत पक्षी का इंतज़ार कर रहे लोगों के लिए खोल दिया गया है। आर.एस.पी.बी. के मार्क थॉमस ने कहा, पूरी संभावना है कि, ये पक्षी वही हैं जिन्होंने गत वर्ष इस क्षेत्र में प्रजनन किया था। उन्होंने कहा, ''बी ईटर्स द्वारा यू.के. में कॉलोनी बनाने की यह शुरुआत लगती है। लेकिन, उनका लौटना यह भी याद दिलाता है कि, यह गर्म होती जलवायु का असर है।'' मार्क ने कहा कि, बी इटर प्रजाति के पक्षी भूमध्यसागरीय क्षेत्र के दक्षिणी भाग में और उत्तरी अफ्रीका में मिलते हैं और चूंकि धरती गर्म हो रही है इसलिए ये पक्षी उत्तर की तरफ बढ़ रहे हैं। आकार में स्टर्लिंग चिड़िया जितने बड़े ये पक्षी लाल पीठ, पीली गर्दन और गहरे फिरोज़ी रंग के पेट से पहचाने जाते हैं। मधुमक्खियां, ड्रैगनफ्लाई व उड़ने वाले अन्य कीड़े इनका प्रिय भोजन हैं। ब्रिटेन में गत 20 सालों में बी ईटर्स द्वारा प्रजनन के 6 प्रयासों का रिकॉर्ड उपलब्ध है, जिसमें अंतिम सफल प्रयास 2014 का आइल ऑफ वाइट का है। यू.के. में 1955 के बाद पहली बार 2002 में डरहम काउन्टी के बिशप मिडिलहैम में बी ईटर्स के बच्चों का जन्म हुआ था। यू.के. में यदा -कदा ही प्रजनन करने वाले इन पक्षियों का गत 20 वर्ष में इंग्लैंड में प्रजनन का यह सातवां प्रयास है। विश्व में 27 प्रकार के बी ईटर्स हैं और अधिकांश एशिया व अफ्रीका में मिलते हैं। उम्मीद की जा रही है कि, पूरी गर्मी ये पक्षी यहां रहेंगे और सर्दी आने पर दक्षिणी अफ्रीका चले जाएंगे।

वागनर विद्रोह के बाद पुनः पुतिन के अजेय होने की किंवदंति स्थापित करना मुश्किल है

पुतिन का कमजोर होना चीन के गले में घंटी बना

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। वागनर मर्सीनरी (भाड़े के सैनिको का एक समूह) समूह के मुखिया इवगैनी प्रिगोज़न, जिनकी प्राइवेट सेना ने यूक्रेन में रुस की तरफ से जोरदार लड़ाई की थी, की बगावत की वजह से रुस की स्थिति बदल गई है।

प्रिगोज़न गत शनिवार को अपने लोगों को रुस और यूक्रेन के युद्ध क्षेत्र में स्थित साउथ कैम्प से मॉस्को की ओर बढ़ने का निर्देश दिया।

रुस में अचानक हुई तख्तापलट की कोशिश ने रुस और उसके सत्ता ढांचे के कई पक्षों को उजागर कर दिया है। इस घटना से यह पता लगा है कि रुस की एकाधिकारवादी सत्ता और पुतिन की मजबूत पकड़ सिर्फ झूठ है, पुतिन ने जब यूक्रेन के खिलाफ युद्ध छेड़ा था तब से लेकर आज की तुलना में वे काफी कमजोर नज़र आते हैं।

- **वैसे तो शुरू से ही, रूस को ''असीमित दोस्ती'' का वादा एक अटपटा उद्घोष था। क्योंकि यूक्रेन के प्रकरण में चीन के ''असीमित समर्थन'' ने यूरोप को रूस के साथ ''शत्रु जैसा'' व्यवहार करने के लिये मजबूर कर दिया था। इससे चीन को व्यापारिक व व्यवसायिक नुकसान तो हुआ ही, चीन की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचा।**
- **पहले तो, नागरिकों का हौसला बढ़ाने के लिये पुतिन ने राष्ट्रीय टी.वी. पर आकर मजबूती का परिचय देते हुए कहा, ''बगावतियों को बख्शा नहीं जायेगा। कठोर सज़ा दी जायेगी।''**
- **पर, फिर पुतिन को वागनर ग्रुप की शर्तें स्वीकार करते हुये, ''सज़ायाफ्ता कैदियों'' की इस फौज के खिलाफ दर्ज सभी मुकदमे वापस लेने की घोषणा करनी पड़ी तथा ''वागनर फौज'' को बेलारूस जाने के लिये ''सेफ पैसेज'' (बिना रोक टोक प्रस्थान) की सुविधा भी देनी पड़ी।**
- **रूस में पुरानी परम्परा है, जो नेतृत्व ''युद्ध'' में हार दिलाता है, उसके साथ निर्दयी व्यवहार होता है। उसे बदल भी दिया जाता है। यह 1905 में हुआ, रूस-जापान युद्ध के बाद और फिर 1917 में भी यह ही देखा गया। क्या यह खतरे की घंटी जैसी स्थिति नहीं है।**

इसी के साथ रुस में हुए इस अचानक घटनाक्रम जिसे ''आन्तरिक मामला'' बताया जा रहा है, का भारी कूटनीतिक प्रभाव पड़ा है। यकायक ही चीन को रुस ''गले की घंटी'' लगने लगा है जबकि पहले वह चीन को अमेरिका व पश्चिम के खिलाफ इस्तेमाल कर रहा था।

पक्के दोस्त के कमजोर होने के कारण चीन खुलकर रुस के राष्ट्रपति की मदद को सामने आया और भाड़े की

(शेष पृष्ठ 5 पर)

मुख पत्र सामना में शिव सेना ने विपक्ष की एकता को ''वागनर सेना'' बताया

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। अपने मुखपत्र ''सामना'' के एक सम्पादकीय में शिव सेना (यू.बी.टी.) ने एक विचित्र समानता दर्शाते हुए, भारत की विपक्षी पार्टियों की तुलना रूस के किराए के सैनिकों (मार्सिनरी) के वागनर ग्रुप से की है, जिसने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के विरूद्ध विद्रोह किया था।

शिव सेना ने अपने मुखपत्र सामना के सम्पादकीय में वागनर ग्रुप को ''प्रजातंत्र का रक्षक'' बताते हुए कहा है कि, जैसे वागनर चीफ इवगैनी प्रिगोज़न ने पुतिन के खिलाफ विद्रोह किया, वैसे ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हराने के लिए पटना पर एक मंच पर इकट्ठे हुए।

- **अपने सम्पादकीय में शिव सेना (उद्धव ठाकरे ग्रुप) ने कहा, जैसे ''वागनर सेना'' तानाशाह पुतिन के खिलाफ विद्रोह कर, ''डैमोक्रेसी'' स्थापित करना चाहती है, उसी प्रकार विपक्ष तानाशाह (मोदी-अमित शाह) के खिलाफ संगठित होकर प्रजातंत्रीय ढांचा (डैमोक्रेसी) स्थापित करना चाहता है।**
- **पर, सामना यह भूल गया कि, ''वागनर सेना'' जेलों से रिहा कराके, सज़ायाफ्ता कैदियों को संगठित करके, बनायी ''पेशेवर सैनिकों'' की फौज है।**

वागनर के साथ तुलना अजीब है, क्योंकि यह रूसी समूह भाड़े के सैनिकों का एक ग्रुप है जिसमें रूस की जेलों से अभियुक्तों को भर्ती किया गया है।

प्रिगोज़न के सशस्त्र बलों ने रस्तोव-ना-दान एवं सदर्न मिलिटरी डिस्ट्रिक्ट पर कब्जा कर लिया था और मॉस्को की तरफ बढ़ रहा था। बेलारूस के राष्ट्रपति, एलैक्ज़ैण्डर लूकाशेंको के साथ बातचीत के बाद प्रिगोज़न पीछे हटने को राजी हो गया तथा इसी जून माह में उसने रस्तोव-ना-दान से अपने सैनिक हटाने शुरू कर दिए। वागनर के विद्रोह के दौरान रूस की मिलिटरी के कम से कम 13 लोग मारे गए, जबकि, वागनर लड़ाकों की तरफ किसी को हताहत होने की सूचना नहीं है।

सामना के सम्पादकीय में कहा गया कि, ''पुतिन की तरह, मोदी-शाह तानाशाही और सम्पूर्ण अधिनायकवाद लाने की कोशिश कर रहे हैं।''

सम्पादकीय में आगे कहा गया कि ''मोदी-शाह जोड़ी ने विजय प्राप्त करने तथा मतदाताओं पर दबाव बनाने के लिए बड़ी संख्या में भाड़े के सैनिक (मर्सिनरी) तैयार किए हैं।

इस बीच, शिव सेना (यू.बी.टी.) नेता, संजय राउत ने वागनर उपमा का उपयोग, शिव सेना-शिंदे गुट के साथ भाजपा के गठबंधन के संदर्भ में किया। उन्होंने कहा, मुख्यमंत्री शिंदे और उनके मंत्रियों की स्थिति ''रूस की भाड़े की सेना'' की तरह है। वो (शिंदे ग्रुप) भी आपके ऊपर (भाजपा पर) हमला करेंगे। वो किसी के सगे नहीं हैं।''

सामना के सम्पादकीय ने प्रधानमंत्री की हाल की अमेरिका यात्रा पर भी तंज कसे और ''अनुचित व अयोग्य अंग्रेजी'' में बोलने के लिए उनकी आलोचना की।

सम्पादकीय में कहा गया कि ''यह स्पष्ट नज़र आ रहा है कि, भारत के प्रजातंत्र, संविधान तथा अल्पसंख्यकों पर हमलों के बारे में वॉशिंगटन की प्रैस कॉन्फ्रैंस में पूछे गए प्रश्नों के कारण प्रधानमंत्री के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई है।''

केरल स्टोरी के निर्माताओं की अगली फिल्म ''बस्तर''

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। फिल्म निर्माता विपुल शाह और सुदीप्तो सेन जिन्होंने साथ मिलकर ''केरल स्टोरी'' बनाई थी अब वे एक नए प्रोजैक्ट पर काम कर रहे हैं, जिसका शीर्षक है ''बस्तर'', यह फिल्म 2024 में रिलीज़ होगी।

शाह के बैनर ''सनशाइन पिक्चर्स'' ने अपने ट्विटर पेज पर यह घोषणा की कि 5 अप्रैल 2024 को हमारी नई फिल्में थेटर में रिलीज़ होगी।

- **फिल्म निर्माता विपुल शाह और सुदीप्तो सेन ने अपने बैनर के ट्विटर पेज पर यह घोषणा की और कहा कि, यह फिल्म एक सच्ची घटना पर आधारित है।**

उन्होंने लिखा, ''हमारी नई फिल्म ''बस्तर'' एक और सच्ची घटना देखने

(शेष पृष्ठ 5 पर)

चीन ने भी बातचीत करके रूस-यूक्रेन युद्ध समेटने की बात की

कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्व सचिव हू शीजिन ने भी चीन के सरकारी समाचार पत्र ग्लोबल टाइम्स में वार्ता का यह प्रस्ताव रखा

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। रूस के राष्ट्रपति युद्ध से थक चुके हैं। व्लादिमिर पुतिन के लिये स्थितियाँ अमंगलकारी हो रही हैं। भाड़े के सैनिकों के ''वागनर ग्रुप'' की कथित बगावत के बाद, पुतिन की स्थिति कमजोर हो गई है। ऐसा लगता है कि उनका मित्र देश चीन भी अब सोचने लगा है कि अब संधि-वार्ता शुरु कर देने का समय आ चुका है।

- **पूर्व सचिव हू शीजिन के अनुसार अब ''शाडनफ्रॉयड'' (दूसरों की बर्बादी देख कर आनंद लेने) का समय नहीं है।**
- **मॉस्को का ड्रामा वैसी घटना नहीं है, जैसे कि, नदी के दूसरे तट पर लगी हुई आग हो, जिसे तटस्थ भाव से केवल देखा जा सकता है।**
- **अतः चीन उस नीति के अनुसरण में काम करना चाहता है, जिससे रूस-यूक्रेन युद्ध का शांतिपूर्ण निपटारा हो।**

पश्चिमी मीडिया की रिपोर्टों का कहना है कि एलैक्जैंडर खोदाकोव्स्की, जो यूक्रेन की पृथकतावादी ताकतों का रूस-समर्थित कमान्डर है, ने वागनर ग्रुप की बगावत के अन्त के बाद, रविवार को एक अशुभ चेतावनी पोस्ट की है, जिसमें दावा किया है कि यह देश ''अब'' वैसा ही कभी नहीं होगा।''

वागनर ग्रुप के नेता इवगैनी प्रिगोज़न ने शुक्रवार को उस समय रूस के रक्षा मंत्रालय के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी थी, जब रूस की सेना ने कथित रूप से यूक्रेन में मौजूद कंपनी के भाड़े के सैनिकों पर हमला कर दिया था तथा बहुत से सैनिकों को मार दिया था। सेनाओं ने, उत्तर में मॉस्को की तरफ बढ़ने से पहले, रूस के नगर रस्तोव-ना-दानू के सैन्य स्थलों पर नियंत्रण कर लिया था। अव्यवस्था तथा अस्पष्टता से भी एक दिन के बाद, बेलारूस की सरकार की मदद से हुई संधि के एक अंग के रूप में, वागनर ग्रुप को हट जाने का आदेश दे दिया गया था।

खोदाकोव्स्की की पोस्ट कहती है, ''हमारा देश फिर से उस स्थिति में कभी नहीं होगा। वागनर लड़ाकों का सैन्य दल डामर की सड़क पर नहीं चल रहा है, वह लोगों के दिलों में होकर, समाज के दो टुकड़े करते हुये गुजर रहा था। हमने ईश्वर से प्रार्थना की कि दुश्मन इस स्थिति का लाभ नहीं ले सके तथा सारे संसाधनों को युद्ध में झोंक देगा, हमारे पास कोई अवसर नहीं होगा। हमारा समय वैसे भी बहुत मुश्किल है, लेकिन कल सब कुछ एक बहुत ही पतले धागे पर लटका हुआ था। और वे लोग जो

(शेष पृष्ठ 5 पर)

एक दिन में सुनाए रिकॉर्ड 65 फैसले

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। सोमवार को दिल्ली हाईकोर्ट की जस्टिस मुक्ता गुप्ता ने जज के रुप में, रिटायर होने से एक दिन से एक दिन पहले 65 निर्णय सुनाए।

ये महत्वपूर्ण निर्णय भी अब, फैसलों की उस लंबी लिस्ट में जुड़ गए हैं जो अपने 14 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने अकेले या अन्य न्यायाधीशों के साथ मिलकर लिखवाए हैं।

कानून जगत के लोग, जहाँ, जस्टिस गुप्ता की प्रशंसा करते हैं, चोर को चोर कहने के लिए, वहीं, संवेदनशील केसों में उनका रवैया सहानुभूतिपूर्ण नज़र आया है।

- **यह रिकॉर्ड बनाया है दिल्ली हाई कोर्ट की जज जस्टिस मुक्ता गुप्ता ने, जो आज रिटायर हो रही हैं।**

रिटायर होने से एक दिन पहले दिए गए 65 निर्णयों में, उनकी अध्यक्षता वाली बैंच ने एक कैदी को मौत की सजा सुनाई। कुछ समय पूर्व दिए गए एक अन्य फैसले में, उनकी अध्यक्षता वाली बैंच ने बलात्कार और हत्या के एक केस में दो व्यक्तियों को बिना राहत के 20 वर्ष कारावास की सजा सुनाई थी।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'केजरीवाल जानते हैं, उनकी ग्रोथ कांग्रेस को कोसने से ही होगी'

इस 'थ्योरी' की अनुपालना वे 2013 से कर रहे हैं तथा पहले दिल्ली और फिर पंजाब में सत्ता में आये

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। जब से दिल्ली के मुख्यमंत्री तथा आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविन्द केजरीवाल सक्रिय राजनीति में आये है, तभी से अर्थात् 2013 से ही, उनके द्वारा अपने अनुकूल सौदेबाजी के लिये खेल खेलना उनकी राजनीति की पहचान बन गये हैं और वे अब भी अपनी आजमाई हुई युक्ति एवं दाँवपेचों को काम में ले रहे हैं। अपनी इसी रणनीति के तहत तो उन्होंने पहली-मीटिंग से पहले यह घोषणा की थी कि अगर कांग्रेस दिल्ली-अध्यादेश पर अपना रूख स्पष्ट नहीं करेगी, तो वे विपक्षी दलों की 23 जून वाली पटना मीटिंग से वाक् आउट कर जायेंगे।

केजरीवाल जानते हैं कि उनकी पार्टी आप कांग्रेस की कीमत पर ही फल-फूल सकती है तथा अपना विस्तार कर सकती है, जैसा कि दिल्ली और पंजाब के मामलों में हुआ है, जहाँ पिछले 10 वर्षों में वह सत्ता में आने में सफल रही है।

- **इस ''थ्योरी'' का मूल आधार, यह तर्क है कि, क्योंकि आप एक छोटी पार्टी है, कांग्रेस की तुलना में, अतः जनता की सहानुभूति आप के साथ ही होगी।**
- **इस ''थ्योरी'' के अंतर्गत, आप उन राज्यों पर फोकस करती आयी है, जहां कांग्रेस का परम्परागत आधार मजबूत रहा है, जैसे गुजरात, और अब मध्य प्रदेश व राजस्थान में यह फॉर्मूला काम में लिया जायेगा।**
- **केजरीवाल ने श्रीगंगानगर से प्रदेश में अपना चुनाव अभियान शुरू करते हुए, मु.मंत्री गहलोत पर कटाक्ष किया कि, अगर गहलोत ने पांच साल जनता के लिये काम किया होता तो, इतने बैनर-होर्डिंग लगाने की नौबत नहीं आती।**
- **केजरीवाल ने यह भी कहा कि, भाजपा ने भी वसुंधरा राजे के शासन में भारी भ्रष्टाचार किया, इस आरोप को गहलोत ने भी जोशीले भाषणों में दोहराया था। पर, अब पायलट द्वारा यह मुद्दा बार-बार उठाने पर भी गहलोत कोई कार्यवाही नहीं कर रहे वसुंधरा राजे के खिलाफ। क्योंकि वसुंधरा राजे उनकी बहन समान हैं।**

जहाँ ऐसा लगा कि रविवार को कांग्रेस नेता अजय माकन द्वारा आप पार्टी पर किया गया हमला विपक्ष के उन प्रयासों के लिये एक धक्के का काम कर सकता है, जो 2024 के चुनावों में भाजपा के सामने एक संगठित मोर्चा खड़ा करने की दिशा में किये जा रहे हैं, वहीं केजरीवाल कांग्रेस को जनता की नज़रों तभी से खलनायक के रूप में प्रोजक्ट करने की कोशिश में लगे हुये थे, जब से विपक्षी एकता की चर्चा शुरु हुई है।

आप प्रमुख जानते हैं कि आप, एक छोटी पार्टी होने के नाते लोगों के दिलो-दिमाग में अपने लिए ज्यादा सहानुभूति पैदा कर लेगी, क्योंकि कांग्रेस बड़ी पार्टी है और यही कारण है कि कांग्रेस पर वे तभी से निशाना साधते आ रहे हैं, जब से वे अन्ना हजारे के नेतृत्व में हुये ''इंडिया अगेन्स्ट करप्शन'' आंदोलन के माध्यम से जनता के सामने आये थे। इस तथ्य से सभी लोग सुपरिचित हैं कि ''इंडिया अगेन्स्ट करप्शन'' आंदोलन आर.एस.एस. एवं भाजपा द्वारा प्रेरित-प्रोत्साहित, वित्त-पोषित तथा गुप्त रूप से समर्थित था।

आप का फोकस उन्हीं राज्यों पर रहा है, जहाँ कांग्रेस सत्ता में है या जहाँ वह मजबूत है। इसका उत्कृष्ट उदाहरण गुजरात में देखने को मिला, जहाँ आप पार्टी ने पिछले विधानसभा चुनावों में एक बार फिर से भाजपा को जिताने में मदद की। पहले तो गोवा और हिमाचल में, और अब राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में, कांग्रेस के जनाधार में राजनैतिक घुसपैठ करने के मामले में आप पार्टी कोई कसर नहीं छोड़ रही है।

अजय माकन ने यह बात बिल्कुल साफ कर दी थी, जब उन्होंने कहा, ''एक तरफ तो अरविन्द केजरीवाल कांग्रेस का समर्थन माँग रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ, जब वे राजस्थान जाते हैं तो हमारे वरिष्ठतम नेताओं- तीन बार मुख्यमंत्री रहे अशोक गहलोत तथा बहुत वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री सचिन पायलट के खिलाफ बयान देते हैं।'' माकन ने यह बाद रविवार को एक वीडियो-वक्तव्य में कही।

माकन ने कहा, ''क्या वे (आप) वास्तव में कांग्रेस का समर्थन चाहते हैं तथा हमारे साथ सुलह करना चाहते हैं?'' उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल पर भाजपा के साथ साँठ-गाँठ का आरोप लगाते कहा,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्र.मंत्री 5 वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाएंगे

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 जून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मंगलवार को मध्यप्रदेश जा रहे हैं, पांच वंदे भारत एक्सप्रैस ट्रेनों को हरी झण्डी दिखाने के लिए। इनमें से एक ट्रेन भोपाल से इंदौर तथा दूसरी भोपाल से जबलपुर है।

तीन अन्य ट्रेन जिन्हें हरी झण्डी दिखाई जाएगी, वो हैं - गोवा (मडगाँव) से मुंबई, गोवा की पहली ट्रेन जो मुंबई के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस तक जाएगी। रांची से पटना, झारखण्ड व पटना में पहली वंदे भारत ट्रेन तथा कर्नाटक में धारवाड़ से बेंगलुरु, जो हुबली को कनैक्ट करेगी।

- **इनमें से दो मध्य प्रदेश में हैं तथा शेष तीन गोवा-मुम्बई, रांची-पटना, और धारवाड़-बैंगलोर हैं।**